JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मापन एवं मूल्यांकन विषय पर निर्मित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन

प्रो. अर्चना दुबे

(E-mail:dubeyarchana1806@gmail.com)

योगेश शर्मा

(E-mail:ys8822957@gmail.com)

सारांश

अध्यापकगण मूल्यांकन को अनेक वर्षों से व्यवहार में लाते रहे है, परन्तु मूल्यांकन के प्रयोजनों, कार्यों और तकनीकों में धीरे–धीरे संशोधन तथा सुधार होता रहा है। अनुसंधान के द्वारा अभिवृत्तियों, रूचियों, आलोचनात्मक चिन्तन और वैयक्तिक–सामाजिक अनुकूलन के माप की नयी तकनीके और विधियाँ विकसित और परिष्कृत की जाती रही है। मूल्यांकन की तकनीकों का क्षेत्र काफी व्यापक है।इनका ज्ञान भावी शिक्षकों को होना आवश्यक है, जिसके द्वारा वे अपने विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक सभी पक्षों में आने वाले परिवर्तनों का उचित मूल्यांकन कर सके। साथ ही विद्यार्थियों का पक्षपात रहित एवं वस्तुनिष्ठता के साथ मूल्यांकन कर उनकी वास्तविक प्रगति का मूल्यांकन किया जा सके। अतः शोधकर्ता द्वारा 'मापन एवं मूल्यांकन विषय पर निर्मित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन'शीर्षक का चयन शोधकार्य हेतु किया गया।शोध कार्य हेतु शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के 41 प्रशिक्षणार्थियों का उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। साख्यिकीय विश्लेषण के फलस्वरूप 'टी' मूल्य व मध्यमानों में सार्थक अंतर पाया गया।निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मापन एवं मूल्यांकन विषय पर निर्मित प्रमाप विद्यार्थियों की उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रभावी पाया गया।

मुख्य शब्द : मापन, मूल्यांकन, उपलब्धि, प्रमाप, 'टी' परीक्षण

प्रस्तावना

वैज्ञानिक अविष्कारों ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया हैं। इससे हमारी शिक्षा भी अछूती नहीं रह सकी। शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षण मशीनों, रेड़ियों, टेलीविजन, टेपरिकार्डर, ग्रामोंफोन, कम्प्यूटर तथा भाषा प्रयोगशाला आदि का प्रयोग किया जाने लगा है। इस प्रकार शिक्षण में मशीनों के प्रयोग से शिक्षा प्रक्रिया का यन्त्रीकरण किया जा रहा है।शिक्षण प्रक्रिया के यन्त्रीकरण के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में ''शैक्षिक तकनीकी'' एक नवीन प्रत्यय तथा विचार धारा का विकास हुआ है। शिक्षा तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न कर दी है। इसने शिक्षण अधिगमप्रक्रिया को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

शिक्षण में प्रमाप एक अत्याधुनिक नवाचार है, इसके द्वारा छात्रों के लिये एक ऐसा अधिगम कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है जिसको छात्र अपनी क्षमता एवं गति के अनुसार पूर्ण करने के लिये स्वतंत्र है तथा जिसके द्वारा छात्रों को पूर्व निर्धारित अधिगम उद्देश्यों तक पहुँचने में सहायता मिलती है।

खानवीस (1976) के अनुसार :– अनुदेशनात्मक प्रमाप एक ऐसी शिक्षण विधि है, जिसमें छात्रों के लिए अधिगम प्रक्रिया को व्यवस्थित किया जाता है तथा अधिगम अनुभवों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।''

एरण्डसेर एवं साथी (1971) के अनुसार :– ''अनुदेशनात्मक प्रमाप शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के एक अथवा अनेक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करने वाला अधिगम क्रियाओ ंका एक विन्यास या समूह है।''

एन.सी.ई.आर.टी. , इग्नू , यूनेस्को एवं भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा भिन्न – भिन्न प्रकार के प्रमाप को विकसित किया गया है तथा उपयोग कियाजाता है।शोधकर्ता ने षि जिज्ञासावश यह जानने का प्रयास किया है कि वर्तमान समय मेंअनुदेशनात्मक प्रमाप शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करने में किस तरह सहायक है।

जैसा कि पूर्व शोध अध्ययन के दौरान पाया किपाटीदार (2005) ने ''निर्देशन एवं परामर्श में निर्देशन सेवाओं के संगठन पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया। शिन्दे (2008) ने स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसंधान एवं सांख्यिकी पर आधारित दृश्य–श्रव्य अनुदेशन सामग्री की प्रभाविता का उपलब्धी एवं प्रतिक्रियाओं के संबंध में अध्ययन किया एवं अनुसंधान एवं सांख्यिकी पर आधारित दृश्य–श्रव्य अनुदेशन सामग्री को प्रभावी पाया। हुसैन (2009) ने उर्दू माध्यम के कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों हेतु विज्ञान के चयनित प्रकरणों पर अनुदेशन सामग्री का विकास एवं उसकी प्रभाविता का अध्ययन किया एवं

उसे प्रभावी पाया। देवड़ा (2011) ने इन्दौर शहर के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों हेतु शिक्षा मनोविज्ञान में प्रायोगिक कार्य पर निर्मित प्रमाप की प्रभाविता का शिक्षा मनोविज्ञान प्रायोगिक कार्य में उपलब्धी एवं विकसित प्रमाप के प्रति प्रतिक्रियाओं के संदर्भ अध्ययन किया। हुरमाड़े (2012) : ने कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी व्याकरण पर विकसति स्व–अधिगम सामग्री की प्रभाविता का हिन्दी व्याकरण में उपलब्धि एवं स्व–अधिगम सामग्री के प्रति प्रतिक्रियाओं के आधार पर अध्ययन किया। अतः शोधकर्ता ने भी यह जानने के लिये कि क्या मापन एवं मूल्यांकन विषय पर निर्मित प्रमाप विद्यार्थियों की उपलब्धि के संदर्भ में प्रभावी है।

शीर्षक

मापन एवं मूल्यांकन विषय पर निर्मित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन"

उद्देश्य

विद्यार्थियों के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि माध्य फलांकों के आधार पर प्रमाप की प्रभाविता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रमाप द्वारा अनुदेशन प्राप्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि माध्य फलाकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

सीमांकन

यह अध्ययन 'शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय' के बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया। प्रमाप केवल हिन्दी भाषा में मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर निर्मित किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शिक्षा अध्ययनशाला, दवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को चयनित किया गया था जिनकी संख्या 41 थी।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध प्रायोगिक प्रकृति का था। शोध कार्य हेतु एक समूह पूर्व–परीक्षण ,पश्च –परीक्षण अभिकल्प (The one group pretest- post test design)का प्रयोग किया गया।

The one group pre test - post test design layout -

O x O

x —— उपचार (Treatment)

O —— पूर्व–परीक्षण (Pre - test)
पश्च–परीक्षण (Post - test)

चर

स्वतंत्र चर– मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर निर्मित प्रमाप तथा आश्रित चर– विद्यार्थियों की उपलब्धि थे।

उपकरण

मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप की प्रभाविता का पता लगाने हेतु शोधार्थी द्वारा निकष संदर्भित परीक्षण का निर्माण किया गया था।निकष संदर्भित परीक्षण में 50 वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों को शामिल किया गया था। इस परीक्षण के लिए समय 1 घण्टा रखा गया था जिसके अंक 100 निर्धारित किये गये थे।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रमाप से संबंधित निकष संदर्भित परीक्षण प्रयोगात्मक समूह पर प्रशासित किया गया था, जो 1 घण्टे का था। इसके पश्चात् प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को प्रमाप पढ़ने को दिया गया था। स्वगति से पढ़ने की स्वतंत्रता थी। कठिनाई आने पर विद्यार्थी शोधकर्ता से मार्गदर्शन ले सकते थे। तत्पश्चात् प्रयोगात्मक समूह पर पश्च निकष संदर्भित परीक्षण प्रशासित किया गया जो 1 घण्टे का था। अन्त में उसी प्रयोगात्मक समूह पर प्रतिक्रिया मापनी प्रशासित कर प्रमाप की प्रभाविता को जानने के लिए प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय तकनीक 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना का पुष्टिकरण

प्रमाप द्वारा अनुदेशन प्राप्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि माध्य फलाकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।'' परिकल्पना से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण सह संबंधित 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय तकनीक द्वारा किया गया। इसके परिणाम का उल्लेखसारणी में किया गया है–

तालिका क्रमांक : 1

प्रयोगात्मक समूह के न्यादर्श का आकार एवं उनके पूर्व एवं पश्च उपलब्धि परीक्षण के माध्य मानक विचलन, सहसंबंध एवं सहसंबंधित 'टी' का मान

Variable	Mean	N	Std. Deviotion	Correlation	t	df	Sig.
Pre-test Achievement	18.8049	41	5.46452	.205	6.089*	40	.000
Post-test Achievement	26.1951	41	6.76099				

* 0.01स्तर पर सार्थक

तालिका से विदित है कि 'टी' का मान 6.089 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है, जबकि स्वतंत्रता का अंश (df) 40 है। इससे स्पष्ट है कि पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य उपलब्धि फलांकों में सार्थक अन्तर है। इसके परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना कि ''प्रमाप द्वारा अनुदेशन प्राप्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा'' निरस्त की जाती है। पश्च परीक्षण के माध्य उपलब्धि फलांक का मान 26.1951 है जो कि पूर्व परीक्षण के माध्य उपलब्धि फलांक 18.8049 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः कहा जा सकता है कि मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया।

निष्कर्ष

मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया।

परिणाम की चर्चा

मापन एवं मूल्यांकन विषय के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया। इस निष्कर्ष की पुष्टि पाटीदार (2005), शिन्दे (2008), पाठक (2008), अजुड़िया (2008), जमरा (2009), देवड़ा (2011), हुरमाड़े (2012), के अध्ययन से होती है। उपरोक्त परिणाम के संभावित कारण हो सकते है कि स्व–अधिगम सामग्री

(प्रमाप) को विद्यार्थियों ने अधिक रूचि के साथ पढ़ा होगा। विद्यार्थियों हेतु स्व–मूल्यांकन करने के लिए स्पष्ट उद्देश्य एवं अन्तर्क्रिया प्रश्नों का समावेश किया गया था।प्रमाप की अन्य विशेषताएं जैसे–नवीनता , रोचक उदाहरण, प्रासंगिक चित्र, अधिगम बिन्दु, विचारणीय कथन, अभ्यास प्रश्न आदि के कारण विद्यार्थियों की मापन एवं मूल्यांकन विषय में उपलब्धि पर उपचार का प्रभाव सार्थक रूप से प्रभावी आया होगा ।

संदर्भ–सूची

1. कुलश्रेष्ठ, एस. पी.(1982). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
2. जोशी, ए. एवं जोशी, के.(2003). शैक्षिक तकनीकी, आगरा भार्गव पब्लिकेशन्स.
3. शर्मा, आर. ए.(1993). अभिक्रमित अनुदेशन मेरठ, लायल बुक डिपो
4. खूंटिया, एस (1998). *निर्देशन एवं परामर्श पर प्रमाप की प्रभाविता का बी. एड. स्तर पर उपलब्धि एवं प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन* (एम. एड लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा संस्थान देवी अ. वि. वि.).
5. पंवार, एम. (2000). *कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों के लिये हिन्दी व्याकरण विषय पर प्रमाप का निर्माण* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान देवी अ. वि. वि.)
6. सिंह, हरीशंकर (2001). *शैक्षिक संस्थाओं का प्रबंधन बी. एड. कोर्स 506 पर विकसित प्रमाप एवं परम्परागत प्रशिक्षण का उपलब्धि, आत्मविश्वास तथा अध्ययन संबंधी आदतों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान देवी अ. वि. वि.)
7. पटेल, सिंह छत्रपाल. (2001). *हिन्दी व्याकरण शिक्षण में संकल्पनात्मक प्रमाप अनुदेशन व स्वीकृत अभिमुखी संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान अनुदेशन की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन एवं पमाप के प्रति प्रतिक्रिया का मापन* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान देवी अ. वि. वि.)

8. महाराणा, एन. (2003). *निर्देशन एवं परामर्श में प्रमापीकृत एवं अप्रमापीकृत प्रविधियों पर प्रमाप की प्रभाविता का बी. एड. स्तर पर उपलब्धि और प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान द. अ. वि. वि.)

9. जोशी, पी. (2004). *बी. एड. पाठ्यचर्या के विषय सम्प्रेषण सूक्ष्मशिक्षण एवं शिक्षण प्रतिमान विषय के अन्तर्गत सम्प्रेषण इकाई पर प्रमाप का विकास एवं प्रमाप की प्रभाविकता का अध्ययन.* (एम. एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे. अ. वि. वि.)

10. अजुडिया, पायल (2008). *बी. एड. कोर्स के विषय 502 (उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा की इकाई) पर विकसित प्रमाप एवं परम्परागत शिक्षण का उपलब्धि व शैक्षिक आकांक्षा स्तर के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे. अ. वि. वि.)

11. पाठक, अलका (2008*). हिन्दी शिक्षण विषय पर प्रमाप का विकास तथा परंपरागत विधि से उसकी तुलना बी. एड. छात्राध्यापकों की हिन्दी शिक्षण में उपलब्धि एवं आत्म संकल्पना के आधार पर अध्ययन* (पी. एच. डी. शोध शिक्षा संस्थान दे. अ. वि. वि.)

12. जमरा, श्रवण (2009). *कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी व्याकरण के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप की प्रभाविकता का हिन्दी व्याकरण में उपलब्धि व प्रमाप के प्रति प्रतिक्रियाओं के आधार पर अध्ययन* (एम. एड. लघु शोध प्रबंध शिक्षा संस्थान द. अ. वि. वि.)

13. पाटीदार, महेन्द्र (2005). *निर्देशन एवं परामर्श में निर्देशन सेवाओं के संगठन पर बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन* (एम. एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे. अ. वि. वि.)